वाचस्पति पुरस्कार : 2007

पुरस्कृत साहित्यकार : स्वामी श्रीरामभद्राचार्य

पुरस्कृत कृति : *श्रीभार्गवराघवीयम्*

स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी का जन्म 14 जनवरी, 1950 को मकर संक्राति के दिन, जौनपुर, उ.प्र. में हुआ. स्वामी रामभद्राचार्य दैवदुर्विपाक से दो मास की आयु में ही रोहे के कारण नेत्रज्योति से वंचित हो गए थे. इस घोर विपत्ति की चिन्ता किए बिना ही इन्होंने आगे बढ़ने का निश्चय किया. आप लगभग 50 उच्चकोटि के हिन्दी एवं संस्कृत के ग्रंथों की रचना कर चुके हैं. स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी प्रज्ञाचक्षु होते हुए भी दिव्यचक्षु संपन्नभगवत्प्रपन्न विभूतिपाद हैं. इन्होंने एम.ए. (आचार्य न्याय व्याकरण) पीएच.डी और डी.लिट्. की उपाधि प्राप्त की. स्वामी जी अनेक भाषाओं की जानकारी रखते हैं. संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से अनुसंधान करके 'विद्यावारिधि' और शिक्षा जगत की सर्वोच्च उपाधि 'वाचस्पति' (डी.लिट.) भी प्राप्त की है. उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वामी श्रीरामभद्राचार्य को विकलांग विश्वविद्यालय के आजीवन कुलाधिपति के रूप में नियुक्त किया है.

महाकवि रामभद्राचार्य जी द्वारा प्रणीत ***श्रीभार्गवराघवीयम्*** संस्कृत महाकाव्य की गौरवशाली परम्परा का महाकाव्य है. प्रबंधात्मक तथा सर्गात्मक दृष्टि से यह संस्कृत महाकाव्य इक्कीस सर्गों में उपनिबद्ध है तथा प्रत्येक सर्ग में 101 श्लोक हैं. इस महाकाव्य की रचना भार्गव एवं राघव को अधिकृत करके की गई है. जिसमें नायक मर्यादापुरुषोत्तम राघव (राम) तथा उपनायक परशुराम जी हैं. इस महाकाव्य में पुरातन एवं नूतन छन्दों का समावेश कर कुल 33 छन्दों का प्रयोग किया गया है. जिसमें श्रीसीतारामचन्द्र जी के गुणानुवाद अभिगीत हैं. इस महाकाव्य में पूर्वार्द्ध के नौ सर्गों में श्रीपरशुराम जी का चरित्र नवनवोन्मेष भावों से अभिगीत है तथा उत्तरार्ध के बारह सर्गों में साक्षात् परब्रह्म लोकलोचनाभिराम श्रीराम का महान चरित्र है. महाकवि जगद्गुरू स्वामी रामभद्राचार्य जी की यह कालजयी रचना ***श्रीभार्गवराघवीयम्*** मध्यप्रदेश संस्कृत बोर्ड, भोपाल द्वारा बाणभट्ट पुरस्कार (सत्र 2006), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा साहित्य अकादमी पुरस्कार (सत्र 2006) तथा रामकृष्ण जयदयाल डालमिया फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा श्रीवाणी अलंकरण पुरस्कार (सत्र 2005) से पुरस्कृत की जा चुकी है.

*****